साहित्योत्सव
Festival of Letters
28 जनवरी - 2 फ़रवरी 2019
भाषाएँ अनेक • देश एक
दैनिक समाचार बुलेटिन
सोमवार, 28 जनवरी 2019

साहित्योत्सव 2019

साहित्य अकादेमी अपने वार्षिक उत्सव 'साहित्योत्सव' का आयोजन इस बार 28 जनवरी 2019 से 2 फ़रवरी 2019 तक कर रही है। साहित्योत्सव 2019 अकादेमी का 35वाँ साहित्योत्सव है। 1985 में छोटे पैमाने पर शुरू हुआ यह उत्सव अब देश के गिने-चुने बड़े साहित्य उत्सवों में शामिल है। इस वर्ष साहित्योत्सव में देश के कोने-कोने से विभिन्न भाषाओं का प्रतिनिधित्व करने वाले लगभग 250 लेखक और विद्वान विविध कार्यक्रमों में भागीदारी करेंगे। उत्सव का आरंभ अकादेमी की वर्ष भर की गतिविधियों को प्रदर्शित करने वाली प्रदर्शनी से होगा। पद्म भूषण सम्मान प्राप्त प्रख्यात लेखक, दार्शनिक, शिक्षाविद् एवं राज्य सभा के माननीय पूर्व संसद सदस्य मृणाल मिरी 28 जनवरी 2019 को पूर्वाह्न 10.00 बजे प्रदर्शनी का उद्घाटन साहित्य अकादेमी, रवींद्र भवन परिसर में करेंगे। इसी दिन अपराह्न 2.00 बजे साहित्य अकादेमी भाषा सम्मान अर्पण समारोह रवींद्र भवन परिसर में होगा। साहित्य अकादेमी द्वारा भाषा सम्मान कालजयी एवं मध्यकालीन साहित्य एवं क्षेत्रीय भाषाओं के संरक्षण, संवर्धन और प्रोत्साहन में उल्लेखनीय योगदान करने वाले विद्वानों/लेखकों को प्रदान किए जाते हैं। इस बार साहित्योत्सव में पहली बार दो दिवसीय आदिवासी महिला लेखिका सम्मिलन आयोजित किया जा रहा है। इस कार्यक्रम का उद्घाटन प्रख्यात हिंदी लेखिका रमणिका गुप्ता करेंगी। इस कार्यक्रम में देश के विभिन्न भागों की 36 आदिवासी भाषाओं की 43 आदिवासी लेखिकाएँ शिरक़त करेंगी।

साहित्य अकादेमी पुरस्कार अर्पण समारोह कमानी सभागार, नई दिल्ली में 29 जनवरी 2019 को सायं 5.30 बजे होगा, जिसमें 24 भारतीय भाषाओं के रचनाकारों को उनकी श्रेष्ठ कृतियों के लिए साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष द्वारा पुरस्कार प्रदान किए जाएँगे। प्रख्यात ओड़िया लेखक और साहित्य अकादेमी के महत्तर सदस्य मनोज दास समारोह के मुख्य अतिथि होंगे। प्रख्यात श्रीलंकाई लेखक और साहित्य अकादेमी के प्रेमचंद फ़ेलोशिप से सम्मानित सांतन अय्यातुरै समारोह के विशिष्ट अतिथि होंगे। जिन्हें प्रेमचंद फ़ेलोशिप साहित्योत्सव में दिनांक 30 जनवरी 2019 को अपराह्न 2.30 बजे आयोजित होने वाले एक अन्य कार्यक्रम में प्रदान की जाएगी। लब्धप्रतिष्ठ लेखक, विद्वान और साहित्य अकादेमी के महत्तर सदस्य गोपीचंद नारंग द्वारा संवत्सर व्याख्यान दिनांक 30 जनवरी 2019 को सायं 6.00 बजे रवींद्र भवन परिसर में दिया जाएगा। व्याख्यान का विषय है - 'फ़ैज़ अहमद फ़ैज़ : तसव्वुरे इश्क़, मानी आफ़रीनी और जमालियाती एहसास'। इसी दिन पूर्वाह्न 11.00 बजे पूर्वोत्तरी कार्यक्रम शुरू होगा, इसमें भारत के उत्तर-पूर्वी और उत्तरी क्षेत्र के लेखक सहभागिता करेंगे। इस कार्यक्रम का उद्घाटन प्रख्यात हिंदी कवि और समालोचक विश्वनाथ प्रसाद तिवारी करेंगे तथा सुपरिचित असमिया लेखक ध्रुब ज्योति बोरा कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि होंगे।

31 जनवरी 2019 को पूर्वाह्न 10.30 बजे से युवा साहिती : नई फसल कार्यक्रम शुरू होगा, जिसमें विभिन्न भारतीय भाषाओं के 27 युवा रचनाकार सम्मिलित होंगे। इस कार्यक्रम का उद्घाटन लब्धप्रतिष्ठ मलयाळम् कवि एवं लेखक के. सच्चिदानंदन करेंगे। विभिन्न सत्रों की अध्यक्षता टी. देवीप्रिया, निर्मलकांति भट्टाचार्जी, गौरहरि दाश और पंकज राग करेंगे।

इसके अतिरिक्त 'भाषांतर : अनुवाद की चुनौतियाँ एवं समाधान', 'मीडिया और साहित्य', 'नाट्य लेखन का वर्तमान परिदृश्य' एवं 'भारत में प्रकाशन की स्थिति' विषयों पर परिचर्चा तथा बच्चों के लिए 'आओ कहानी बुनें' के अंतर्गत वैविध्यपूर्ण कार्यक्रम आयोजित किए जाएँगे।

आज के कार्यक्रम

अकादेमी प्रदर्शनी का उद्घाटन
मृणाल मिरी द्वारा
रवींद्र भवन परिसर, पूर्वाह्न 10.00 बजे

भाषा सम्मान अर्पण समारोह
रवींद्र भवन परिसर, अपराह्न 2.00 बजे

अखिल भारतीय आदिवासी लेखिका सम्मिलन
रवींद्र भवन परिसर, अपराह्न 3.30 बजे

सांस्कृतिक कार्यक्रम : बैगा नृत्य
गोपी कृष्ण सोनी के बैगा युवा नृत्य दल द्वारा
रवींद्र भवन परिसर, सायं 6.00 बजे

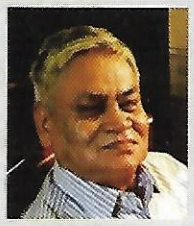

मृणाल मिरी करेंगे साहित्य अकादेमी प्रदर्शनी का उद्घाटन

साहित्योत्सव का आरंभ अकादेमी की वर्षभर की गतिविधियों को प्रदर्शित करनेवाली प्रदर्शनी से होगा। पद्म भूषण सम्मान प्राप्त प्रख्यात लेखक, दार्शनिक, शिक्षाविद् एवं राज्यसभा के माननीय पूर्व संसद सदस्य मृणाल मिरी 28 जनवरी 2019 को पूर्वाह्न 10.00 बजे प्रदर्शनी का उद्घाटन साहित्य अकादेमी, रवींद्र भवन परिसर में करेंगे। मृणाल मिरी ने शिलांग में नव स्थापित नॉर्थ ईस्टर्न हिल यूनिवर्सिटी में दर्शनशास्त्र विभाग की स्थापना की तथा 2005 में इसी विश्वविद्यालय के कुलपति के रूप में सेवानिवृत्त हुए। आपने इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ़ एडवांस्ड स्टडीज़, शिमला में निदेशक तथा दो बार भारतीय दर्शन अनुसंधान परिषद् के अध्यक्ष के रूप में कार्य किया है। आपने सेंटर फ़ॉर स्टडीज़ ऑफ़ डेवलपिंग सोसाइटीज़ के अध्यक्ष तथा राजीव गाँधी विश्वविद्यालय, ईटानगर में कुलाधिपति के रूप में भी अपनी सेवाएँ दी हैं।

साहित्योत्सव में पहली बार

अखिल भारतीय आदिवासी लेखिका सम्मिलन

साहित्योत्सव में पहली बार दो दिवसीय आदिवासी महिला लेखिका सम्मिलन आयोजित किया जा रहा है। इस कार्यक्रम में देश के विभिन्न भागों की 36 आदिवासी भाषाओं की 43 आदिवासी लेखिकाएँ शिरक़त करेंगी।

ट्रांसजेंडर कवि सम्मिलन

इस वर्ष साहित्योत्सव में पहली बार एक नया कार्यक्रम सम्मिलित किया गया है-ट्रांसजेंडर कवि सम्मिलन, जो 2 फ़रवरी 2019 को अपराह्न 2.30 बजे होगा। इस कार्यक्रम का उद्घाटन प्रख्यात साहित्यकार, विदुषी मानबी बंद्योपाध्याय करेंगी। वे पहली ट्रांसजेंडर हैं जिन्हें एक महाविद्यालय का प्राचार्य बनाया गया था। इस कार्यक्रम में देश के अलग-अलग क्षेत्रों से पधारे 14 ट्रांसजेंडर कवि अपनी रचनाएँ प्रस्तुत करेंगे।

महात्मा गाँधी के 150वें जन्म वर्ष पर विशेष पुस्तक प्रदर्शनी एवं राष्ट्रीय संगोष्ठी

महात्मा गाँधी के 150वें जन्म वर्ष के उपलक्ष्य में साहित्योत्सव में एक विशेष कॉर्नर बनाया गया है, जिसमें महात्मा गाँधी द्वारा लिखित और उन पर लिखी गई लगभग 700 पुस्तकें प्रदर्शित की जा रही हैं। साहित्योत्सव में प्रति वर्ष आयोजित की जाने वाली त्रि-द्विवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का विषय है 'भारतीय साहित्य में गाँधी'। 31 जनवरी 2019 को पूर्वाह्न 11.00 बजे इसका उद्घाटन लब्धप्रतिष्ठ अंग्रेज़ी कवि और लेखक जयंत महापात्र करेंगे तथा मॉरीशस सरकार के पूर्व शिक्षा मंत्री, यूनेस्को के पूर्व निदेशक व इंटरनेशनल तिरुक्कुरल फ़ाउंडेशन के अध्यक्ष अरमूगम परसुरामन संगोष्ठी के विशिष्ट अतिथि होंगे। प्रख्यात इतिहासकार एवं अंग्रेज़ी लेखक सुधीर चंद्रा बीज वक्तव्य देंगे। संगोष्ठी के 11 विभिन्न सत्रों में प्रतिष्ठित लेखक/विद्वान साहित्य के विभिन्न क्षेत्रों पर पड़े गाँधी जी के प्रभावों पर चर्चा करेंगे।

साहित्य अकादेमी पुरस्कार 2018 अर्पण समारोह

प्रति वर्ष के साहित्योत्सव का मुख्य आकर्षण पुरस्कार वितरण समारोह होता है, जो इस बार 29 जनवरी 2019 को सायं 5.30 बजे कमानी सभागार में आयोजित होगा। प्रख्यात ओड़िया लेखक और साहित्य अकादेमी के महत्तर सदस्य मनोज दास समारोह के मुख्य अतिथि होंगे। प्रख्यात श्रीलंकाई लेखक और साहित्य अकादेमी के प्रेमचंद फ़ेलोशिप से सम्मानित सांतन अय्यातुरै समारोह के विशिष्ट अतिथि होंगे। साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष चंद्रशेखर कंबार पुरस्कार विजेताओं को पुरस्कार प्रदान करेंगे। समारोह के अंत में रात्रि 7.00 बजे प्रख्यात नृत्यांगना सोनल मानसिंह द्वारा नाट्यकथा 'कृष्णा' की प्रस्तुति होगी। प्रख्यात ओडिसी नृत्यांगना सोनल मानसिंह प्रसिद्ध सामाजिक कार्यकर्ता, विचारक, शोधकर्ता, वक्ता, कोरियोग्राफर और शिक्षिका भी हैं। आपने भारतीय पौराणिक कथाओं के माध्यम से कई नृत्य कलाएँ बनाई हैं। उन्होंने अपने नृत्य के माध्यम से पर्यावरण सुरक्षा, महिलाओं की मुक्ति तथा अन्य सामाजिक मुद्दों पर निरंतर अपने दर्शकों को जागरूक किया है।

साहित्य अकादेमी पुरस्कार 2018 के विजेता

सनन्त तांति (जन्म : 1952) प्रख्यात असमिया कवि हैं। आपका प्रथम कविता-संग्रह *उज्जल नख्यतरार शब्दांत* 1981 में प्रकाशित हुआ। पुरस्कृत कृति *काइलैर दिनटो आमार हब* सनन्त तांति की असमिया कविताओं का संग्रह है, जो गहन सामाजिक परिवर्तनों के बीच मानवीय मानसिकता को चित्रित करता है।

संजीव चट्टोपाध्याय (जन्म : 1934) एक प्रख्यात कथाकार हैं। समालोचकों और प्रख्यात लेखकों द्वारा आपकी पहली प्रकाशित कहानी स्वेत पाथरेर टेबल को बहुत प्रशंसा प्राप्त हुई थी। पुरस्कृत कृति *श्रीकृष्णेर शेष कटा दिन* बाङ्ला कथाकृति भगवान कृष्ण के अंतिम कुछ दिनों पर केंद्रित है। एक पात्र, गांधारी, द्वारा सुनाई गई यह कथा युद्ध में हुए समस्त रक्तपात और विपत्तियों के परिणाम के बारे में बताती है।

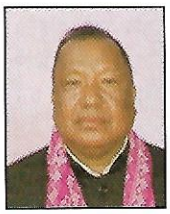

रितुराज बसुमतारी (जन्म : 1963) बोडो के प्रख्यात लेखक एवं संपादक हैं। पुरस्कृत कृति *दोंसे लामा* रितुराज बसुमतारी की 23 बोडो कहानियों का संग्रह है। इस संग्रह की कहानियाँ मुख्य रूप से बोडो लोगों के सामाजिक जीवन को चित्रित करती हैं। इसमें कुछ कहानियों के कथानक मुख्यत: बोडो ग्रामीण जीवन से लिए गए हैं तो कुछ बोडो जातीय पुनरुत्थान पर आधारित हैं।

इन्दरजीत केसर (जन्म : 1946) डोगरी के प्रख्यात कथाकार, कवि, निबंधकार, अनुवादक एवं संपादक हैं। आपने लेखन-कार्य 1967 से प्रारंभ किया और आपकी पहली पुस्तक *फुल्ल खिरदे रेह* 1998 में प्रकाशित हुई। पुरस्कृत कृति *भागीरथ* इन्दरजीत केसर का डोगरी उपन्यास है। यह कृति मनुष्य द्वारा झेले जा रहे अनेक मुद्दों एवं चुनौतियों को चित्रित करती है। ग्रामीण परिवेश के इर्द-गिर्द बुनी गई इसकी कथा मानव-जीवन के आनंदपूर्ण और विक्षोभयुक्त क्षणों को रेखांकित करती है।

अनीस सलीम (जन्म : 1968) चर्चित अंग्रेज़ी लेखक हैं। आपने 16 वर्ष की आयु से लेखन-कार्य प्रारंभ किया। आपकी 5 पुस्तकें प्रकाशित हैं। पुरस्कृत कृति द *ब्लाइंड लेडी'ज़ डिसेंडेंट्स* अनीस सलीम का अंग्रेज़ी उपन्यास है, जिसमें दक्षिण भारत के छोटे शहर में रह रहे मुस्लिम परिवार के धीरे-धीरे होते पतन को चित्रित किया गया है।

शरीफा विजलीवाला (जन्म : 1962) गुजराती की प्रख्यात समालोचक, संपादक तथा अनुवादक हैं। 1999 में आपकी पहली कृति प्रकाशित हुई थी। पुरस्कृत कृति *विभाजननी व्यथा* शरीफा कासमभाई विजलीवाला के गुजराती आलोचनात्मक निबंधों का संग्रह है, जो भारत विभाजन पर आधारित फ़िल्मों और उपन्यासों पर केंद्रित है।

चित्रा मुद्गल (जन्म : 1943) प्रख्यात हिंदी कथाकार, निबंधकार, समालोचक एवं अनुवादक हैं। आपकी पहली कृति *ज़हर ठहरा हुआ* 1980 में प्रकाशित हुई थी। पुरस्कृत कृति पोस्ट *बॉक्स नं. 203 - नाला सोपारा* चित्रा मुद्गल का हिंदी उपन्यास है, जिसमें यौन-बाधित लोगों के मुद्दों को उठाया गया है। इन यौन-बाधित लोगों को विशेष रूप से बनाई गई 'अन्य' नामक एक श्रेणी में वर्गीकृत कर दिया जाता है और उन्हें अपना लिंग चुनने की स्वतंत्रता भी नहीं दी जाती।

के.जी. नागराजप्प (जन्म : 1934) कन्नड भाषा के प्रतिष्ठित आलोचक, कथाकार और निबंधकार हैं। आपकी प्रथम पुस्तक 1962 में प्रकाशित हुई थी। पुरस्कृत कृति *अनुश्रेणी-यजमानिके* कन्नड निबंधों का संग्रह हैं, जिसमें समाज में वैदिक एवं अवैदिक परंपराओं की भूमिका एवं कार्य तथा जनसामान्य पर उसके प्रभाव की छानबीन और आलोचनात्मक विश्लेषण किया गया है।

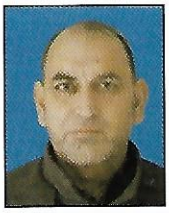

मुश्ताक़ अहमद मुश्ताक़ (जन्म : 1961) लब्धप्रतिष्ठ कश्मीरी कथाकार, संपादक और अनुवादक हैं। आपकी कहानियों की पहली पुस्तक *येथ वावि हाएली* 1997 में प्रकाशित हुई थी। पुरस्कृत कृति *आख* मुश्ताक़ अहमद मुश्ताक़ की 18 कश्मीरी कहानियों का संग्रह है। कहानियाँ विशेष तौर से 1990 के बाद कश्मीर के लोगों के मस्तिष्क और सामाजिक परिवेश पर उथल-पुथल के प्रभावों तथा साथ ही समाजार्थिक व पर्यावरणीय स्थितियों में परिवर्तनों को दर्शाती हैं।

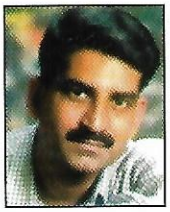

परेश नरेंद्र कामत (जन्म : 1968) कोंकणी के लब्धप्रतिष्ठ कवि एवं अनुवादक हैं। श्री कामत की पहली कविता 1988 में प्रकाशित हुई थी। पुरस्कृत कृति *चित्रलिपी* परेश नरेंद्र कामत की कोंकणी कविताओं का संकलन है। इसमें एक चक्रीय यात्रा का वर्णन है, जो जल से प्रारंभ होकर अन्य परिघटनाओं से गुज़रती है और अंत में भूमि पर पहुँचकर पूर्ण होती है। समग्रता में, इस संग्रह की कविताएँ जीवन की अंतहीन यात्रा का स्मरण कराती हैं और उसे जीवंत बनाए रखती हैं।

वीणा ठाकुर (जन्म : 1954) प्रख्यात मैथिली कथाकार, संपादक और अनुवादक हैं। पुरस्कृत कृति *परिणीता* मैथिली कहानियों का संग्रह है, जो समकालीन समाज में मानव मूल्यों के व्यापक क्षरण और अपकर्ष तथा मानव जीवन पर इसके विनाशकारी प्रभावों का चित्रण करता है। कहानी के मुख्य पात्र द्वारा झेले गए संघर्षों की बाबत कथानक आधुनिक जीवन शैली की दारुण व्यथा को पूरी जीवंतता से उभारता है।

एस. रमेशन नायर (जन्म : 1948) मलयाळम् भाषा के प्रख्यात कवि, नाट्यकार, फ़िल्मी गीतकार, पटकथा लेखक तथा अनुवादक हैं। पुरस्कृत कृति *गुरुपौर्णमि* मलयाळम् कविता-संग्रह है, जो केरल के महान समाज सुधारक एवं बीसवीं सदी के सम्मान्य विचारकों में से एक श्री नारायण गुरु के जीवन, दृष्टि एवं दर्शन से आप्लावित है।

बुधिचंद्र हैस्नांबा (जन्म : 1973) मणिपुरी के लब्धप्रतिष्ठ कहानीकार और कवि हैं। पुरस्कृत कृति *ङम्खैगी वाङमदा* मणिपुरी कहानियों का संग्रह है। संग्रह की कहानियाँ अपनी प्रकृति में मानवतावादी सांप्रदायिक सौहार्द और प्रेम तथा विवेक के शाश्वत मूल्यों का बखान करती हैं।

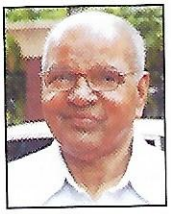

मधुकर सुदाम पाटील (जन्म : 1931) मराठी भाषा के प्रख्यात कवि, लेखक एवं आलोचक हैं। आपने *प्रतिष्ठान*, *सत्यकथा* एवं *संदर्भ* नामक साहित्यिक पत्रिकाओं में आलोचनात्मक रचनाओं के लेखन से अपने साहित्यिक जीवन का आरंभ किया था। पुरस्कृत कृति *सर्जनप्रेरणा आणि कवित्वशोध* मराठी आलोचना कृति है, जो विभिन्न सर्जनात्मक मनोवेगों विशेषकर कविता से संबंधित है।

लोकनाथ उपाध्याय चापागाईं (जन्म : 1947) नेपाली भाषा के प्रख्यात कवि, कहानीकार, निबंधकार एवं शोधकर्ता हैं। आपने 1958 में लेखन आरंभ किया तथा आपका पहला निबंध *आमा* नामक मासिक पत्रिका में प्रकाशित हुआ था। पुरस्कृत कृति *किन रोयौं उपमा?* नेपाली कहानी-संग्रह है, जो समाज में विभिन्न स्तरों पर व्याप्त बुराइयों के संदर्भ में है।

दाशरथी दास (जन्म : 1936) ओड़िया भाषा के प्रख्यात लेखक, संपादक एवं आलोचक हैं। आपने 1960 में लेखन आरंभ किया तथा आपकी पहली पुस्तक *काव्य संवाद* 1973 में प्रकाशित हुई। पुरस्कृत कृति *प्रसंग पुरुणा भावना नूआ* ओड़िया समालोचनात्मक निबंध-संग्रह है, जो ओड़िशा की काव्य परंपराओं, कविता की सर्जनात्मक प्रक्रिया एवं ओड़िया की अन्य साहित्यिक परंपराओं से संबंधित है।

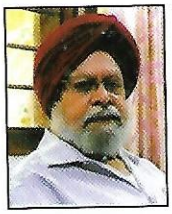

मोहनजीत सिंह (जन्म : 1938) पंजाबी भाषा के प्रख्यात कवि और लेखक हैं। आपने 1962 में लेखन आरंभ किया तथा अभी तक आपकी 26 पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं। पुरस्कृत कृति *कोने दा सूरज* पंजाबी का व्याख्यान है, जिसमें कोणार्क मंदिर के निर्माण के साथ उस समय के इतिहास, कला एवं शक्ति समीकरणों के विमर्श की विभिन्न परतों को उकेरा गया है।

राजेश कुमार व्यास (जन्म : 1973) प्रख्यात राजस्थानी कवि और समकालीन कला एवं संस्कृति के आलोचक हैं। पुरस्कृत कृति *कविता देवै दीठ* राजस्थानी कविता-संग्रह है, जिसमें संगीत, चित्रकला और नृत्य विषयक कविताएँ हैं। संग्रह की कविताएँ आदिम संस्कृति की अर्थता एवं दर्शन की अनुगूँज के साथ-साथ रेगिस्तान की कठिन ज़िंदगी तथा लोक साहित्य एवं जीवनशैली को दर्शाती हैं।

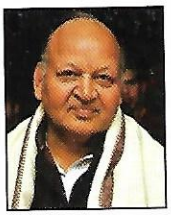

रमाकांत शुक्ल (जन्म : 1940) संस्कृत और हिंदी के सुपरिचित विद्वान, कवि, नाट्यकार, लेखक, संपादक एवं अनुवादक हैं। पुरस्कृत कृति *मम जननी* संस्कृत कविता-संग्रह है, जो पूरी तरह से विभिन्न सामाजिक संरचनाओं, आधुनिक जीवन की स्वाभाविक स्थितियों, आंदोलन, सामाजिक संस्थाओं और समाज पर उनके प्रभाव से संबंधित है।

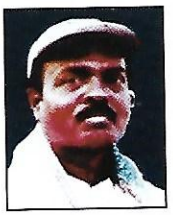

श्याम बेसरा (जन्म : 1961) 'जिवीराड़ेच्' संताली भाषा के प्रख्यात कवि, कथाकार एवं निबंधकार हैं। पुरस्कृत कृति *माड़ोम* संताली उपन्यास है, जिसमें संताल परगना के जनजातीय विस्थापन तथा सुदूर क्षेत्रों में संताल जनजीवन पर भूमंडलीकरण के प्रभाव का चित्रण किया गया है। इस कृति में संताल लोगों, विशेषकर ग्रामीण संतालियों के सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक एवं आर्थिक पहलुओं का नयनाभिराम चित्रण मिलता है।

खीमन यू. मूलाणी (जन्म : 1944) सिंधी भाषा के प्रसिद्ध कवि हैं। आपने 1960 में लेखन आरंभ किया तथा आपकी पहली पुस्तक 1986 में प्रकाशित हुई। पुरस्कृत कृति *जीअ में टांडा* सिंधी कविता-संग्रह है। इसमें ग़ज़ल, गीत, दोहे और त्रिपदियाँ संगृहीत हैं। *जिअ में टांडा* का अर्थ भीतर की आग है, जो समाज की घटनाओं के बारे में कवि की अनुभूतियों की काव्यात्मक अभिव्यक्ति है।

एस. रामकृष्णन (जन्म : 1966) तमिळ् भाषा के प्रख्यात लेखक, विद्वान, पटकथा लेखक एवं अनुवादक हैं। आपने 1989 में कहानियाँ लिखना आरंभ किया तथा आपकी पहली पुस्तक 1990 में प्रकाशित हुई। पुरस्कृत कृति *संचारम* तमिळ् उपन्यास है, जो नागस्वरम विद्वानों के जीवन और संघर्ष पर आधारित है। उपन्यास में तमिलनाडु की बंजर धरती कारिसाल भूमि के नागस्वरम वादकों के जीवन का मार्मिक चित्रण है।

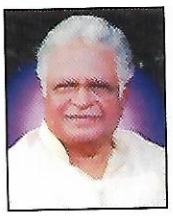

कोलकलूरि इनाक् (जन्म : 1939) तेलुगु भाषा के प्रख्यात लेखक, कवि, आलोचक, विद्वान और अनुवादक हैं। आपने 1954 में कहानियाँ लिखना आरंभ किया तथा अब तक आपकी 72 कृतियाँ प्रकाशित हैं। पुरस्कृत कृति *विमर्शिनि* तेलुगु की आलोचना कृति है, जिसमें तेलुगु आलोचना, तेलुगु उपन्यास का विकास तथा तेलुगु कहानी का उद्भव एवं विकास पर विमर्श है।

रहमान अब्बास (जन्म : 1972) उर्दू भाषा के कथाकार और आलोचक हैं। पुरस्कृत कृति *रोहज़ीन* उर्दू उपन्यास है, जो अपने माता-पिता के विवाहेतर संबंधों के साक्षी रहे बच्चों के मनोवैज्ञानिक आघात और पीड़ा से संबंधित है। यह उपन्यास मानवीय भावनाओं, विशेषकर प्यार, लालसा एवं कामुकता जैसी विशिष्ट अभिव्यक्तियों के विविध पहलुओं को उजागर करता है।

हिंदी भाषा के लिए पहला साहित्य अकादेमी पुरस्कार 1955 में माखनलाल चतुर्वेदी की काव्य पुस्तक *हिमतरंगिनी* को दिया गया था। वर्ष 1962 में कोई पुरस्कार नहीं दिया गया। वर्ष 2018 तक कुल दिए गए 63 पुरस्कारों में से 27 बार काव्य-संग्रह और 24 बार उपन्यास चुने गए हैं।

प्रेस सम्मिलन

मीडिया को साहित्योत्सव 2019 के बारे में विस्तृत जानकारी देने के लिए एक प्रेस सम्मिलन का आयोजन 24 जनवरी को सायं 4.00 बजे साहित्य अकादेमी के तृतीय तल स्थित सभाकक्ष में किया गया। इसे संबोधित करते हुए साहित्य अकादेमी के सचिव, के. श्रीनिवासराव ने बताया कि इस साहित्योत्सव में देश के कोने-कोने से विभिन्न भाषाओं का प्रतिनिधित्व करने वाले लगभग 250 लेखक और विद्वान विविध कार्यक्रमों में भागीदारी करेंगे। महात्मा गाँधी के 150वें जन्म वर्ष के उपलक्ष्य में साहित्योत्सव में एक विशेष कॉर्नर बनाया गया है, जिसमें महात्मा गाँधी द्वारा लिखित और उन पर लिखी गई लगभग 700 पुस्तकें भी प्रदर्शित की जा रही हैं। अन्य सभी कार्यक्रमों के बारे में जानकारी देते हुए सचिव महोदय ने बताया कि इस वर्ष हम पहली बार 'ट्रांसजेंडर कवि सम्मिलन' आयोजित कर रहे हैं। प्रेस सम्मिलन के अंत में उन्होंने पत्रकारों द्वारा पूछे गए विभिन्न प्रश्नों के उत्तर भी दिए।

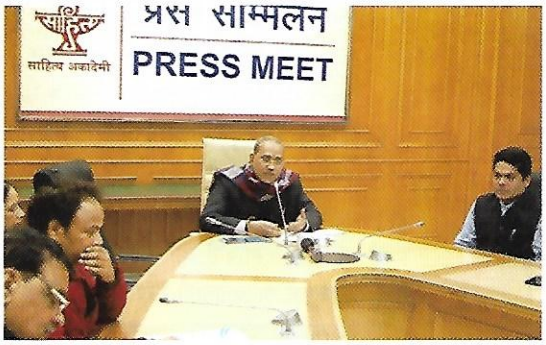

साहित्योत्सव के कार्यक्रम

28 जनवरी 2019

अकादेमी प्रदर्शनी का उद्घाटन
पूर्वाह्न 10.00 बजे, रवींद्र भवन परिसर

भाषा सम्मान अर्पण समारोह
अपराह्न 2.00 बजे, रवींद्र भवन परिसर

सांस्कृतिक कार्यक्रम : बैगा नृत्य
गोपी कृष्ण सोनी के बैगा युवा नृत्य दल द्वारा
सायं 6.00 बजे, रवींद्र भवन परिसर

अखिल भारतीय आदिवासी लेखिका सम्मिलन
अपराह्न 3.30 – सायं 5.30 बजे, रवींद्र भवन परिसर

29 जनवरी 2019

अखिल भारतीय आदिवासी लेखिका सम्मिलन (जारी...)
पूर्वाह्न 10.00 बजे – सायं 4.00 बजे, रवींद्र भवन परिसर

अकादेमी पुरस्कार विजेताओं से मीडिया की बातचीत
पूर्वाह्न 10.30 – अपराह्न 12.30 बजे, रवींद्र भवन परिसर

साहित्य अकादेमी पुरस्कार 2018 : अर्पण समारोह
सायं 5.30 बजे, कमानी सभागार

सांस्कृतिक कार्यक्रम : नाट्य-कथा : कृष्णा
सोनल मानसिंह एवं समूह द्वारा
सायं 7.00 बजे, कमानी सभागार

30 जनवरी 2019

लेखक सम्मिलन
(पुरस्कृत लेखक अपने रचनात्मक अनुभव साझा करेंगे)
पूर्वाह्न 10.00 – अपराह्न 1.00 बजे, रवींद्र भवन परिसर

पूर्वोत्तरी
उत्तर-पूर्वी और उत्तरी लेखक सम्मिलन
पूर्वाह्न 11.00 – सायं 5.30 बजे, रवींद्र भवन परिसर

परिचर्चा : भाषांतर : अनुवाद की चुनौतियाँ एवं समाधान
प्रख्यात श्रीलंकाई लेखक सांतन अय्यातुरै को प्रेमचंद फ़ेलोशिप 2017 अर्पण
अपराह्न 2.30 – सायं 5.30 बजे, रवींद्र भवन परिसर

संवत्सर व्याख्यान : फ़ैज़ अहमद फ़ैज़ पर गोपीचंद नारंग द्वारा
सायं 6.00 बजे, रवींद्र भवन परिसर

31 जनवरी 2019

आमने-सामने
साहित्य अकादेमी पुरस्कार 2018 से पुरस्कृत लेखकों की प्रतिष्ठित साहित्यकारों/विद्वानों से साथ बातचीत
पूर्वाह्न 10.00 – अपराह्न 1.30 बजे, रवींद्र भवन परिसर

युवा साहिती : नई फसल
अखिल भारतीय युवा लेखक सम्मिलन
पूर्वाह्न 10.30 – सायं 5.30 बजे, रवींद्र भवन परिसर

सांस्कृतिक कार्यक्रम : गायन-बायन, माटी अखरा एवं राम विजय खंड दृश्य
श्री श्री उत्तर कमलाबाड़ी सत्र, शंकर देव कृष्टि संघ, असम द्वारा
सायं 6.00 बजे, रवींद्र भवन परिसर

राष्ट्रीय संगोष्ठी : भारतीय साहित्य में गाँधी
पूर्वाह्न 11.00 – सायं 5.30 बजे
साहित्य अकादेमी सभागार

1 फ़रवरी 2019

राष्ट्रीय संगोष्ठी : भारतीय साहित्य में गाँधी (जारी...)
पूर्वाह्न 10.00 – सायं 6.00 बजे, साहित्य अकादेमी सभागार

परिचर्चा : मीडिया और साहित्य
पूर्वाह्न 11.00 – अपराह्न 1.30 बजे, रवींद्र भवन परिसर

परिचर्चा : नाट्य लेखन का वर्तमान परिदृश्य
अपराह्न 2.30 – सायं 5.30 बजे, रवींद्र भवन परिसर

सांस्कृतिक कार्यक्रम : इंडो-फ्यूज़न संगीत : सुनीता भुयाँ एवं समूह द्वारा
सायं 6.00 बजे, रवींद्र भवन परिसर

2 फ़रवरी 2019

राष्ट्रीय संगोष्ठी : भारतीय साहित्य में गाँधी (जारी...)
पूर्वाह्न 10.00 – सायं 6.00 बजे, साहित्य अकादेमी सभागार

आओ कहानी बुनें : बच्चों के लिए विविध कार्यक्रम
पूर्वाह्न 10.30 – अपराह्न 2.00 बजे, रवींद्र भवन परिसर

परिचर्चा : भारत में प्रकाशन की स्थिति
पूर्वाह्न 11.00 बजे – अपराह्न 1.30 बजे, रवींद्र भवन परिसर

ट्रांसजेंडर कवि सम्मिलन
अपराह्न 2.30 – सायं 5.00 बजे, रवींद्र भवन परिसर

साहित्य अकादेमी
रवींद्र भवन, 35, फ़ीरोज़शाह मार्ग, नई दिल्ली-110001
ईमेल : secretary@sahitya-akademi.gov.in
दूरभाष : 011-23386626/27/28, फ़ैक्स : 011-23382428
वेबसाइट : http://www.sahitya-akademi.gov.in